€ सफलता की कहानियां €

❖ **स्कूल का नाम और पूरा पता, ईमेल आईडी**

जिल्हा परिषद प्राथमिक विद्यालय, वाळवी पो. गट्टा तहसील एटापल्ली जिला.गडचिरोली महाराष्ट्र राज्य , पिन कोड 442704

ईमेल - katelwar86@gmail.com

❖ प्रिंसिपल का पूरा नाम , मोबाइल नंबर और ईमेल

श्री। श्रीकान्त गताय कटेलवार

मोबाइल नंबर 9422728944

ईमेल - katelwar86@gmail.com

स्कूल प्रबंधन

जिला परिषद, गढ़चिरौली

स्कूल मीडियम

मराठी

स्कूल कक्षा

कक्षा 1 से4 कक्षा

छात्रों की कुल संख्या

लड़के - 11 लड़कियां - 14 कुल – 25

सफलता के लिए चुने गए क्षेत्र/विषय

• स्थानीय/भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार की जाने वाली विशिष्ट गतिविधियाँ...।

• जनजातीय क्षेत्रों में स्कूलों में मानक भाषा यात्रा के लिए बोली • परिचय -

वाळवी गढ़चिरौली जिले के अत्यंत उपेक्षित, नक्सल प्रभावित एटापल्ली तालुक में एक छोटा सा पहाड़ी गांव है। चारों तरफ घने जंगलों से घिरा जहां विकास की गंगा दिखती नही अभी भी नहीं पहुंचे. गांव तक जाने के लिए सड़क नहीं है. पगडंडी के रास्ते गांव तक पहुंचा जा सकता है। मानसून के दौरान वालवी तक पहुंचना एक कठिन काम है, क्योंकि चारों तरफ पहाड़ी ढलानों से निकलने वाली कई नदियाँ और धाराएँ रास्ते में खड़ी होती हैं।. नासिक जिला परिषद से 12 साल की लंबी सेवा के बाद जब मैं खुद के जीले मे आया, तो गडचिरोली आने की खुशी असाधारण थी। उसके बाद जब एटापल्ली तालुक के वलवी स्कूल में नियुक्ति हुई तो वहां की समग्र भौगोलिक स्थिति और स्कूल की खराब हालत देखकर मेरे सामने बड़ी चुनौती खड़ी हो गई। मैंने उस चुनौती को स्वीकार किया और विद्यार्थियों के साथ रहकर अध्ययन एवं अध्यापन प्रारम्भ किया.

मेरे वाळवी गांव में, जहां माडिया और ओरोव आदिवासी जनजातियों के 200 लोग रहते हैं, गांव में माडिया बोली बोली जाती है। यहां के ग्रामीणों में मराठी भाषा की गंध नहीं है, वे मराठी भाषा बिल्कुल नहीं समझते या बोलते हैं। वालवी में माडिया बस्ती में जिला परिषद की पहली से चौथी कक्षा वाला मेरा एक शिक्षकीय स्कूल। इमारत खतरनाक, पूरी तरह से जर्जर और जर्जर है। बरसात के मौसम में यह इमारत और भी डरावनी लगती है। इमारत की दीवार में बड़ी दरार आ गई है और इमारत कब ढह जाएगी कुछ कहा नहीं जा सकता. उक्त भवन में छात्रों को ले जाकर बैठाना खतरनाक है, यह महसूस करते हुए ग्रामीणों व प्रशासन के निर्देशानुसार उन्होंने विद्यालय के बगल में गोटुल में विद्यालय स्थापित करना शुरू कर दिया. गाँव में सभी ने 'पदुम उत्सव' मनाया और परिवार के प्रत्येक सदस्य की भागीदारी से एक नई रोशनी में 'गोटूलरूपी मिनी स्कूल' की स्थापना की गई। भले ही दुनिया टूट जाए, रीढ़ की

हड्डी नहीं टूटी.... पीठ पर हाथ रखो और बस इतना कहो कि लड़ो...!इस समय कवि कुसुमाग्रज की ये पंक्तियाँ याद आ गईं।

माडिया आदिवासी की बोली महिया है और शिक्षा की भाषा मराठी नहीं है, उनकी शिक्षा में बड़ी समस्या यह थी कि आदिवासी बच्चे मानक भाषा नहीं समझते थे।

विद्यालय के जीर्ण-शीर्ण भवन एवं स्थानीय बोली भाषा-माड़िया के कारण विद्यार्थियों को मूल भाषा सीखने में होने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए माहिया बोली से लेकर लघु विद्यालय स्थापित कर विद्यार्थियों के भाषा कौशल को बढ़ाने के प्रयास प्रारंभ किये गये। शैक्षिक सामग्री के रूप में प्रकृति के तत्वों का उपयोग करके गोटुल में मूल भाषा। स्कूल ने महाराष्ट्र सहित देश भर में अपनी पहचान बनाई है। छात्र कहीं भी, कभी भी, किसी भी स्थिति में अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं यदि उनमें सर्वांगीण विकास करने की अदम्य इच्छाशक्ति हो। डब्ल्यू प्राथमिक विद्यालय, वालवी ने यह विद्यालय दिखाया।

हमें स्कूल की सफलता की कहानी प्रस्तुत करते हुए खुशी या गर्व हो रहा है। इस सफलता की कहानी में, हम 2019 से अब तक लागू की गई गतिविधियों की समीक्षा करते हैं, कठिनाइयों का सामना करके हमने जो परिणाम हासिल किए हैं।

• क्षेत्र - स्थानीय/भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार की जाने वाली विशिष्ट गतिविधियाँ :- हमारा विद्यालय बहुत ही पहाड़ी, सुदूरवर्ती क्षेत्र में है, विद्यालय की स्थिति बहुत ही खराब थी। विद्यालय की खतरनाक इमारत को देखकर अभिभावक अपने बच्चों को नहीं भेज रहे थे स्कूल या अन्य स्कूलों में नामांकन। वैकल्पिक रूप से, स्कूल का स्कोर 1 था और स्कूल में बच्चे की उपस्थिति नगण्य रही। स्थिति को ध्यान में रखते हुए ग्रामीणों एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की सहमति से विद्यालय के बगल में गोटुल में विद्यालय की स्थापना की गई तथा छात्र-छात्राओं का अध्ययन एवं अध्यापन प्रारंभ किया गया। अत: बच्चे को सुरक्षित स्थान पर रहने की सुविधा मिलने से विद्यालय में बच्चों की संख्या एवं उपस्थिति में वृद्धि हुई। गोटूल में जनजातीय संस्कृति पर आधारित मिनी स्कूल में डिज़ाइन की गई नवीन गतिविधियों का विवरण निम्नलिखित है।

1) ताड़ के पेड़ का फल के रूप में उपयोग ताड़ की कली को गोटूल में रंगकर फल तैयार किया जाता था। उसके माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का अध्ययन एवं अध्यापन कराया जाता था

2) स्मृति पट्टिका - माड़िया आदिवासी समाज में मृतक की स्मृति में एक बड़ा पत्थर जमीन में गाड़ा जाता है। इस पत्थर से बहुत लगाव और प्यार है. ग्राम पाटला के श्रमदान से गोटुल में पत्थरों को तख्तों में बदला गया। आदिवासी बच्चे इस पत्थर पर लिखे अक्षरों और शब्दों को बड़े चाव से पढ़ते हैं

माडिया आदिवासी की बोली महिया है और शिक्षा की भाषा मराठी नहीं है, उनकी शिक्षा में बड़ी समस्या यह थी कि आदिवासी बच्चे मानक भाषा नहीं समझते थे।

विद्यालय के जीर्ण-शीर्ण भवन एवं स्थानीय बोली भाषा-माड़िया के कारण विद्यार्थियों को मूल भाषा सीखने में होने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए माहिया बोली से लेकर लघु विद्यालय स्थापित कर विद्यार्थियों के भाषा कौशल को बढ़ाने के प्रयास प्रारंभ किये गये। शैक्षिक सामग्री के रूप में प्रकृति के तत्वों का उपयोग करके गोटुल में मूल भाषा। स्कूल ने महाराष्ट्र सहित देश भर में अपनी पहचान बनाई है। छात्र कहीं भी, कभी भी, किसी भी स्थिति में अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं यदि उनमें सर्वांगीण विकास करने की अदम्य इच्छाशक्ति हो। डब्ल्यू प्राथमिक विद्यालय, वालवी ने यह विद्यालय दिखाया।

हमें स्कूल की सफलता की कहानी प्रस्तुत करते हुए खुशी या गर्व हो रहा है। इस सफलता की कहानी में, हम 2019 से अब तक लागू की गई गतिविधियों की समीक्षा करते हैं, कठिनाइयों का सामना करके हमने जो परिणाम हासिल किए हैं।

• क्षेत्र - स्थानीय/भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार की जाने वाली विशिष्ट गतिविधियाँ :- हमारा विद्यालय बहुत ही पहाड़ी, सुदूरवर्ती क्षेत्र में है, विद्यालय की स्थिति बहुत ही खराब थी। विद्यालय की खतरनाक इमारत को देखकर अभिभावक अपने बच्चों को नहीं भेज रहे थे स्कूल या अन्य स्कूलों में नामांकन। वैकल्पिक रूप से, स्कूल का स्कोर 1 था और स्कूल में बच्चे की उपस्थिति नगण्य रही। स्थिति को ध्यान में रखते हुए ग्रामीणों एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की सहमति से विद्यालय के बगल में गोटुल में विद्यालय की स्थापना की गई तथा छात्र-छात्राओं का अध्ययन एवं अध्यापन प्रारंभ किया गया। अत: बच्चे को सुरक्षित स्थान पर रहने की सुविधा मिलने से विद्यालय में बच्चों की संख्या एवं उपस्थिति में वृद्धि हुई। गोटूल में जनजातीय संस्कृति पर आधारित मिनी स्कूल में डिज़ाइन की गई नवीन गतिविधियों का विवरण निम्नलिखित है।

1) ताड़ के पेड़ का फल के रूप में उपयोग ताड़ की कली को गोटूल में रंगकर फल तैयार किया जाता था। उसके माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का अध्ययन एवं अध्यापन कराया जाता था

2) स्मृति पट्टिका - माड़िया आदिवासी समाज में मृतक की स्मृति में एक बड़ा पत्थर जमीन में गाड़ा जाता है। इस पत्थर से बहुत लगाव और प्यार है. ग्राम पाटला के श्रमदान से गोटुल में पत्थरों को तख्तों में बदला गया। आदिवासी बच्चे इस पत्थर पर लिखे अक्षरों और शब्दों को बड़े चाव से पढ़ते हैं

इसका उपयोग किया गया, गोटूल में विभिन्न वस्तुओं पर द्विभाषी चार्ट, माड़िया मराठी शब्दों का उपयोग छात्रों की शब्दावली को बढ़ाने के लिए किया गया। प्रमाण भाषा की कविताएँ, कहानियाँ और कहानियाँ छात्रों को तुरंत याद हो गईं। निगर्ग सधिध्य में गोटुल के एक स्कूल में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की विभिन्न गतिविधियों में भाषाई खेलों का चयन करके छात्रों के भाषा कौशल को विकसित करने का प्रयास किया गया। उससे माड़िया भक्त विद्यार्थी बड़े आत्मविश्वास के साथ मानक भाषा में बोलने और बातचीत करने लगे। छात्रों के भाषा कौशल को बढ़ाने के लिए विकसित एक अभिनव पहल का आयोजन गोटुल के एक मिनी स्कूल में किया गया। आइए अक्षर को पहचानें, वर्णमाला की सीढ़ी, क्या टोकरी में छिपी है? विद्यार्थियों का भाषा विकास विभिन्न गतिविधियों जैसे चलो पट्टिका पर लिखे शब्दों को पढ़ें, पहाड़ को पढ़ें, छिपे हुए को खोजें, पेड़ों की पत्तियाँ पढ़ें, के माध्यम से किया गया।

विद्यार्थियों में यह विश्वास पैदा हुआ कि वे मानक भाषा में पढ़-लिख सकते हैं। मानक भाषा के बारे में आशंका दूर की गई और माड़िया भाषी विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़ा गया। हम प्रकृति के तत्वों की सहायता से बहुत सी बातें सीख सकते हैं। छात्र खुश थे कि उन्हें दूसरों से अलग ज्ञान मिला।

निष्कर्ष

समग्र जिला परिषद प्राइमरी स्कूल, वालवी प्रगति की ओर अग्रसर है और इसके लिए स्कूल, शिक्षक, समाज और प्रशासन हमारी पूरी मदद कर रहे हैं। हालाँकि स्कूल की सफलता के लिए हम शिक्षकों को शारीरिक, मानसिक और वित्तीय कठिनाइयों को सहन करना पड़ता है, लेकिन

अपने छात्रों को कुछ अलग और अधिक सीखने का अनुभव देने की संतुष्टि शिक्षक के चेहरे पर देखी जा सकती है।

संदर्भ लिंक :-

फोटो

https://drive.google.com/drive/folders/1ApaFpTf-FSgx2_R-62Wv_A6A-

https://drive.google.com/drive/folders/1adnx_sboWuy5ptedIStLfEWfPg8RGERa

https://www.facebook.com/1487663018223526/posts/pfbid0MPNUT8tMS9JkKCu1szAGnfG7yM5WFBH9zRMYvtEqTHnQfz5wf68kmfQjeyNxPM9Ll/?mibextid=Nif5oz

https://drive.google.com/drive/folders/1adnx_sboWuy5ptedIStLfEWfPg8RGERa?usp=share_link

https://youtu.be/LML4ZJ_PWJk

https://youtu.be/8AEjhwy7Oxo

https://youtu.be/h-io2m7V1v4

https://youtu.be/pqSWVJNsVUs

https://youtu.be/a44a2rHykP8

https://youtu.be/83T-CClTgkI

https://youtu.be/mrd2drrDwdY

https://youtu.be/rkG-JnMDlig

http://epaper.lokmat.com/articlepage.php?articleid=LOK_PULK_20220921_3_10

http://product.sakaalmedia.com/portal/SM.aspx?ID=406610

https://www.facebook.com/1487663018223526/posts/pfbid02F4rGQt72QPqabkucuuM8RYYt2Px3LsMX7bnHTXmKPPGC147at6V4juV1uWG6Lpk6l/

https://www.facebook.com/1487663018223526/posts/pfbid0BXTBVm647HkBtg6fRoDm2toqD4KkWBp2pWhYeQvsPHopgLziBgzoFNF6ppUQeEKsl/?mibextid=Nif5oz

वीडियो

https://youtu.be/0y3ySCPFh8s

https://youtu.be/LML4ZJ PWJK

https://youtu.be/ll9U4nlLvSY?si=xhZK2tdWWOXUVbpZ

https://youtu.be/likoYQNOrFQ?feature=shared

https://youtu.be/sPpT9XiQtAQ?si=tk7KQkKAmCiEURi2

https://youtu.be/yi1Fu_4pS80?si=27fOu41bVYJO5g0Q

https://youtu.be/h-io2m7V1v4?si=bCLsGLBdleupapQ5

https://youtu.be/pqSWVJNsVUs?si=xnIx3cXdyZbpljXG

https://youtu.be/0y3ySCPFh8s?si=_eq7O6UUK5aSECDR

https://youtu.be/r5FQai229m4?si=Yv3uClQk9abBWfci

मुख्याध्यापक
जि.प.प्राथ शाळा,वाळवी
केंद्र गट्टा पं.स.एटापल्ली